संस्कृत साहित्य में नारी का योगदान

Gayatri Sureshchandra
Shree Muktajivan Shwamibapa Mahila College Bhuj

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के समान साहित्य में भी नारीयों ने पुरूषों के समान ही योगदान दिया है। संस्कृत साहित्य भी इसका अपवाद नहीं है। संस्कृत वाङ्मय में प्रारंभ से विदुषियों का योगदान रहा है ओर उन्हों ने विद्ववानों के समान ही साहित्य की रचना की और उसकी अभिवृद्धि की है। वैदिक काल से ही हमें इसका निदर्शन मिलता है । अपाला, घोषा, गोधा, विश्ववारी, सूर्या, सावित्री, वागाम्भृणी, लोपामुद्रा, रोमशा, उर्वशी आदि ने मंत्रों का दर्शन किया ।[1] वैदिक साहित्य में २६ ब्रहमवादिनियों की सूची प्राप्त होती है।लौकिक संस्कृत साहित्य में भी विज्जका, माहला, मोरिका, विकट नितम्बा, शिलाभट्टारिका, अवन्ति सुंदरी, गंगा देवी, रामभद्राम्बा, तिरूमलाम्बा, विश्वासदेवी, बीमाबाई वैजयन्ती आदि प्राचीन और मध्यकालिन कवयित्रियों और विदुषियों के नाम प्राप्त होतें हैं।

१८ वीं शताब्दी में घनश्याम की दो विदुषी पत्नीयां सुन्दरी और कमला ने विशालभजिका की चमत्कार तरंगिणी टीका लिखीं ।[2]

१९ वीं शताब्दी में अनन्ताचार्य की पुत्री त्रिवेणी ने अनेक काव्य और नाटक लिखकर संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया । रंगाभ्युदयम, सम्पतकुमारविजयं दो नाटक, दो स्तोत्र काव्य लक्ष्मीसहस्रं, रंगनाथसहस्रं, दूत काव्य शुक संदेश, भंग संदेश, दो तत्त्वज्ञान परक नाटक रंगराजसमुदयं, तत्त्वमुदोदयं की रचना कर अक्षय यश अर्जित किया ।[3]

१९ वीं शताब्दी में ही पच्च पागेश की पुत्री कामाक्षी ने रामचरित नामक लघुकाव्य लिखा ।[4]

२० वीं सदी में १९२२ में अलमेल्ला नामक विदुषी नें बुध्धचरित नामक चरित ग्रन्थ लिखकर चरितग्रन्थों के लेखन में योगदान दिया ।[5]

आधुनिक संस्कृत विदुषीयों में सर्वप्रथम नाम पण्डिता क्षमाराव का है जिन्हों ने अष्टादश अध्यायों में निबध्ध सत्याग्रहगीता महाकाव्य लिखा जो देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत है ।

संस्कृत *विदुषीयों में अग्रणी श्रीमती लीलाराव दयाल पण्डिता क्षमाराव की पुत्री है इन्हों ने पण्डिता क्षमाराव की कथाओं का नाटय रूपान्तरण किया और उधान रूपकों के रूप में नेपाल,अमेरिका आदि विदेशों में उनको प्रस्तुत किया । लगभग २४ रूपकों की रचना कि जिनमें निम्नलिखित प्रमुख है*

गिरिजाया: प्रतिज्ञा
बालविधवा
होलिकोत्सव:
क्षणिकविभ्रम:
गणेशचतुथी:
मिथ्या ग्रहणम
कटुविपाक:
कपोतालय
वृतशंसितछत्रम्
स्वर्णपुरकृषिबला:
अनूप:
बिठालाचरितम्
क्षमाचरितम्
असूयिनी
वीरभा:
तुकारामचरितम्
ज्ञानेश्वरचरितम्
जयन्तु कुमाउनीया:
मीराचरितम्
मायाजाल:
हरिसिंह:
परमभक्त
कृपाणिका
नाटयचन्द्रिका
तुलाचलाधिरोहणम्
शिवाजीराट्

इन सब रूपकों में विविध समस्याओं और विषयों को लिया गया है,जैसे होलिकोत्सव में मत्स्यजीवी परिवार की दुर्दशा,कटुविपाक में सत्याग्रह आन्दोलन से प्रेरित रेवा और विरभा का सर्वस्व त्याग ।

आधुनिक संस्कृत साहित्य में डा. रमा चौधुरी का भी विशिष्ट स्थान है ।संस्कृत भाषा में उन्हो नें
२५ रूपकों की रचना की थी ।

श्रीमती कमलारत्नम ने रामायण के व्यापक प्रभाव को प्रकाशित करने के साथ साथ कालिदास को विदेशों में लोकप्रिय बनाने की प्रमुख भूमिका निभायी थी । संस्कृत पारिजातम् मासिकपत्रिका के संरक्षक मण्डल की वह सदस्या थीं ।संस्कृत की कवयित्री एवं नाटयकत्री के रूप में वह विख्यात थीं ।

इसके उपरांत डा. कमला पाण्डेय ने रक्षत गंगाम्, गंगा दण्डकम् की रचना की है ।डा. नलिनी शुकला ने राधानुनय,पार्वतीतपर्श्या एवं मुक्तिमहोत्सव नाटय की रचना की थी । डा. पुष्पा दीक्षित ने अग्निशिखा की रचना की थी ।डा. मनोरमा तिवारी ने संस्कृत गीतमालिका की रचना की थी ।डा. महाश्वेता चतुर्वेदी ने विवेक विजय, उपमन्यु परीक्षा,ज्योति कलश आदि की रचना की थी । डा. मिथिलेश कुमारी मिश्रा ने सुभाषितसुमनोऽंजलि, व्यासशतकम्, चन्द्रचरितम् संस्कृत काव्य की रचनाएं की थी ।

डा. वनमाला भवालकर ने गीर्वाण गद्य प्रदीप तथा गौतम धर्मसंग्रह पुस्तक का भी सम्पादन किया था ।डा. शशी तिवारी ने वाणी वन्दना,पश्य मम भारतम् आदि काव्य की रचनाएं की थी ।डा. सावित्री देवी शर्मा ने काव्यलोक नामक ग्रंथ में रचनाएं लिखी है।इनकी अन्य रचना संस्कृतगीतांजलि भी है।

डा. सिम्मी कन्धारी ने स्नेहक्रीडा, आगच्छत्वम्, कर्तव्यम्, गञ्जलिका, हदयभावसप्तकम् आदि अनेक रचनाएं की थी ।इन कवयित्रीयों की अतिरिक्त विगत दशक की कुछ अन्य कवयित्रीयों की भी कविताएं संस्कृत पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं ।

आधुनिक संस्कृत साहित्य में वर्तमान समय में भी कई कवयित्रीयां साहित्य सर्जन कर रही हैं।समसामयिक विषयों को लेकर और पौराणिक इतिवृतों का कायाकल्प करके संस्कृत प्रचार प्रसार का कार्य कर रही है और संस्कृत वांड्मय में अपना योगदान दे रही हैं ।

पादटीप

1 *आधुनिक* संस्कृत महिला नाटयकार ,डो. मीरा द्विवेदी ।

2 *आधुनिक* संस्कृत नाटक भाग १ ,प.१२७

3 *आधुनिक* संस्कृत साहित्ये स्त्रीणां योगदान , डो. मीरा द्विवेदी, प.१०२

4 *आधुनिक* संस्कृत साहित्ये स्त्रीणां योगदान , डो. मीरा द्विवेदी, प.१०२

5 *आधुनिक* संस्कृत साहित्ये स्त्रीणां योगदान , डो. मीरा द्विवेदी, प.१०३

संदर्भग्रंथ

1 *आधुनिक* संस्कृत महिला नाटयकार, डो. मीरा द्विवेदी, परिमल प्रकाशन,दिल्ली,२०००

2 *आधुनिक* संस्कृत नाटक भाग १, रामजी उपाध्याय ।

3 *आधुनिक* संस्कृत साहित्ये स्त्रीणां योगदान, वनमाला भवालकर ।

4 संस्कृत वांड्मय में नारी चित्रण, गंगा सहाय शर्मा ।

5 *आधुनिक* संस्कृत कवयित्रीर्यां, डो. अर्चनाकुमारी दुबे, नवजीवन पब्लिकेशन ,२००६

6 Some Essys in Sanskrit literery criticism, Dr. Manjul Gupta, sanjay prakashan,2002.